Dr. Sangita Kumari Saha
B.A. D-I (H) 1st paper.
& D-I (S)

Gestalt theory of Perception

जर्मनी में वर्ष 1912 ई० में गेस्टाल्टवाद की स्थापना संरचनावाद के विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के विरोध में Wertheimer, Kohlar तथा Koffka के द्वारा की गई थी। इन सभी ने मनोविज्ञान की विषय वस्तु की पूर्णता पर बल दिया था।

आकृति पृष्ठभूमि ->

कोई भी संगठित वस्तु एक पृष्ठभूमि में रखी प्रतीत होती है। यह वस्तु एक सीमा-रेखा को अपने चारों ओर बना लेती है जिसके अन्दर वह सीमित रहती है। सीमा-रेखा का बनना काफी हद तक प्रकाश की तीव्रता पर निर्भर करता है। इसे इस प्रकार समझा जा सकता है कि सिनेमा के पर्दे पर डाली जाने वाली रोशनी यदि कम है तो जिस वस्तु की छाया बनाना हम चाहते हैं वह आकृति रहित एवं अव्यवस्थित होगी, किन्तु यदि रोशनी तीव्र होगी तो आकृतियाँ स्पष्ट होंगी।

जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु का प्रत्यक्षण करता है तो उस वस्तु का कुछ भाग अत्यन्त स्पष्ट दिखाई देता है तथा कुछ भाग अस्पष्ट भी दिखता है जो भाग अत्यन्त स्पष्ट दिखाई देता है उसे आकृति तथा जो भाग अस्पष्ट है उसे पृष्ठभूमि प्रत्यक्षण कहा जाता है।

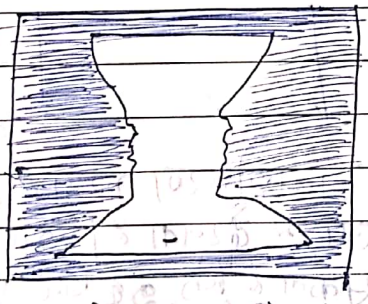

चित्र में या तो नीला गोबलेट आकृति बन सकती है या सफेद भाग जो गोबलेट के चारों ओर है। यदि एक व्यक्ति निष्क्रिय रूप से देखे तो पहला वाला भाग पहले आकृति प्रतीत होती है और फिर भाग। आकृति को देखने में व्यक्ति का मानसिक झुकाव बहुत महत्वपूर्ण है। इसके कारण व्यक्ति नीले भाग को अधिक देर तक आकृति की तरह देख सकते हैं या सफेद भाग को आकृति की तरह देख सकते हैं। जिस वस्तु को हम आकृति समझते हैं उसकी सीमान्त रेखाएं स्पष्ट हो जाती हैं और आकृति को उसी प्रकार से घेरे प्रतीत होती है।

Scanned with CamScanner